


---

amarabharatabhuvanajAH

——  
अमरभरतभुवनजाः

——  
Document Information



---

Text title : amarabharatabhuvanajAH

File name : amarabharatabhuvanajAH.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : Ranajit

Latest update : March 24, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 21, 2022

*sanskritdocuments.org*

---



अमरभरतभुवनजाः



अमरभरतभुवनजाः महितचरितशोभनाः  
शयनमात्मनो विहाय कुरुत सपदि जागराम् ।  
शुभदजीवनं विधातुमवितुमखिलमानवान्  
सम्पठाम संस्कृतं प्रसारयाम सत्वरम् ॥ १ ॥


क्लेशनिचयवारणाय साधनां प्रकुर्महे  
कष्टदुरित-तारणाय योजनां विदध्महे ।  
लक्ष्यसिद्धिमुज्वालां विधातुमात्मनो वयं  
सम्पठाम संस्कृतं प्रसारयाम सत्वरम् ॥ २ ॥

युवजनान्तरङ्गके प्रकृत्य धर्मजागरां  
अन्धकारमग्नलोकमुद्धराम साम्प्रतम् ।  
लक्ष्यसिद्धिमुज्वालां विधातुमात्मनो वयं  
सम्पठाम संस्कृतं प्रसारयाम सत्वरम् ॥ ३ ॥


अतुलसङ्घवैभवेन निखिलसोदरानिमान्  
पावयाम संस्कृतापगामृताम्भसा वयम् ।  
पूतमानसैः समं ततो विदध्महे द्रुतं  
संस्कृतं यशोयुतं समर्थमार्षभारतम् ॥ ४ ॥

सर्वथा समर्थ-संस्कृतार्षदेशसृष्टये  
सर्वसद्गुणाभिपूर्णविश्वपौरवृद्धये ।  
शाश्वतैक्यसाधनाय सामरस्यसिद्धये  
सम्पठाम संस्कृतं प्रसारयाम सत्वरम् ॥ ५ ॥

इति रणजितविरचितं अमरभरतभुवनजाः गीतं सम्पूर्णम् ।

——  
*amarabharatabhuvanajAH*

pdf was typeset on November 21, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

